मैथिली (Subsidiary)
बी० ए० (S) पार्ट-02

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक - 15.07.2021

प्रकरण - मिथिला नाटक

महाराज कलि, आलस्यकेँ शीघ्र एबाक संवाद दैत छथि।

आलस्य- घर बैसल खरचा नित पाबी,
कतहु जाइ नहि आबी।
अनके आस सतत मन राखी,
पहिले काल बिताबी ॥

ओह! एहन नौकरीक कोन काज?
के दरबार जाए आबै?

आलस्य, बड्ड सोचलनि जे कोनो अरजी पठाए दैत छियनि, मुदा राजाक आज्ञाक कारणेँ सोचलनि जे जेबामे भलाई अछि।

आलस्य, महाराज कलिक समीप जाय यशोगान करैत छथि।

महाराज कलि, आउ-आउ आलस्य! अहाँक एबामे श्रम भेल।

स्वभाव गुण नम्रता निविद्य बुद्धि गम्भीरता